Topic – PROCESSES OR KINDS OF SOCIAL CHANGE

सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएं या प्रकार

सामाजिक परिवर्तन की अपनी कुछ प्रक्रियाएं होती है, जिन्हे मैकाइवर, सोरोकिन आदि विद्वानों ने इस प्रकार प्रस्तुत किया

(1) सामाजिक परिवर्तन की चक्रवत प्रक्रिया (The cyclical Processes of Social change) – इस प्रक्रिया के अन्तर्गत परिवर्तन की प्रकृति एक चक्र की भाँति होती है अर्थात जिस स्थिति से परिवर्तन शुरू होता है, परिवर्तन की गति गोलाकार मे आगे बढ़ते-बढ़ते फिर उसी स्थान पर लौट आती है जहां पर वह आरम्भ में थी। फिलफ्रेडो परेटो ने सामाजिक परिवर्तन के अपने चक्रिय सिद्धान्तो मे यह दर्शाने का प्रयत्न किया है कि किस भाँति राजनीतिक, आर्थिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र मे चक्रिय गति से परिवर्तन होता है।

(2) सामाजिक परिवर्तन की विकासवादी प्रक्रिया (evolutionary process of Social change.) – डार्विन के प्राणिशास्त्रीय उद्विकास के सिद्धान्त के अनुसरण करके 19वीं शताब्दी मे हरबर्ट स्पेंसर ने सामाजिक परिवर्तन की विकासवादी प्रक्रिया को एक निश्चित ढंग से प्रस्तुत किया। इस प्रक्रिया की मान्यता यह है कि प्राणीशास्त्रीय परिवर्तन की भाँति सामाजिक परिवर्तन भी कुछ आन्तरिक शक्तियों के कारण ही संभव होता है और परिवर्तन के इस क्रम मे समाज का कोई भाग सरल से धीरे-धीरे जटिल (या धारण कर लेता है।

(3) प्रगति के रूप में सामाजिक परिवर्तन (Progress as Social change) – सामाजिक परिवर्तन की यह प्रक्रिया उस समय सामने आती है जबकि परिवर्तन अच्छ

की दिशा में हो रहा हो। वास्तव में अच्छाई के लिए परिवर्तन को ही प्रगति कहते हैं। इस अर्थ में प्रगति भी सामाजिक परिवर्तन की एक निश्चित दिशा को दर्शाती है और वह दिशा यह है कि समाज की वर्तमान स्थिति में उन्नति करने के सम्बन्ध में हमारी इच्छाओं और लक्ष्यों के अनुरूप ही परिवर्तन हो। इस प्रकार के परिवर्तन में समाज का कल्याण और सामूहिक हितों की पूर्ति संभव होती है। सामाजिक परिवर्तन की उद्विकासीय प्रक्रिया में परिवर्तन आन्तरिक शक्तियों की क्रियाशीलता के फलस्वरूप छोटे-छोटे एक स्तर से दूसरे स्तर का होता हुआ सामने आता है इसके विपरीत प्रगति के रूप में सामाजिक परिवर्तन बाहरी शक्तियों द्वारा भी प्रभावित होता है, परिवर्तन बहुत शीघ्रता से भी हो सकता है और एक के बाद दूसरे स्तर से गुजरने की कोई अनिवार्य आवश्यकता नहीं होती है। साथ ही इस प्रकार के परिवर्तन समाज के लिए कल्याणकारी होता है और उसे अच्छाई की मात्रा को देखा या नापा जा सकता है।

(4) क्रांति के रूप में सामाजिक परिवर्तन (Revolution as Social change) — परिवर्तन की यह चौथी प्रक्रिया उस समय सामने आती है, जबकि परिवर्तन बहुत ही एकाएक और विस्फोटक रूप में होता है। क्रांति की स्थिति में राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण उलट-फेर हो जाता है जिसके फलस्वरूप फिर से एक नयी समाज व्यवस्था के निर्माण की आवश्यकता होती है। क्रांति के अन्तर्गत परिवर्तन अत्यंत आकस्मिक रूप में होता है परन्तु ध्यान से देखा जाय तो यह स्पष्ट होगा कि क्रांति भी एक प्रक्रिया ही है।

(5) अनुकूलन रूप में सामाजिक परिवर्तन (Adaptation as Social change) — मैकाइवर तथा पेज ने अनुकूलन को भी सामाजिक परिवर्तन की एक महत्व प्रक्रिया माना है। फेयरचाइल्ड के अनुसार "किसी पर्यावरण विशेष में रहने के लिए अपने को उपयुक्त बनाने की प्रक्रिया को ही अनुकूलन कहा जाता है।"

समाप्त